Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-4(A)| April-2026

Original Article

रूस–यूक्रेन युद्धः भू–राजनीतिक कारण एवं अंतरराष्ट्रीय प्रतिक्रियाओ का वैश्विक प्रभाव

डॉ देवेंद्र कुमार पाण्डेय
सहायक आचार्य
राजनीति शास्त्र विभाग
गांधी स्मारक त्रिवेणी पी.जी. कॉलेज, बरदह, आजमगढ

Manuscript ID:
JRD -2026-180401
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 4(A)
Pp. 1-4
April- 2026
Submitted: 18 Mar. 2026
Revised: 28 Mar. 2026
Accepted: 12 Apr. 2026
Published: 30 April. 2026

सारांश

रूस–यूक्रेन युद्ध 21वीं सदी के सबसे महत्वपूर्ण भू–राजनीतिक संघर्षों में से एक है, जिसका वैश्विक राजनीति, अर्थव्यवस्था और सुरक्षा पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। इस अध्ययन में इस संघर्ष की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, प्रमुख कारणों तथा अंतरराष्ट्रीय प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण किया गया है, साथ ही इसके व्यापक वैश्विक परिणामों का भी मूल्यांकन किया गया है। यह शोध द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित गुणात्मक एवं विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण को अपनाता है, जिसमें अंतरराष्ट्रीय संबंधों के प्रमुख सैद्धांतिक दृष्टिकोण जैसे यथार्थवाद और उदारवाद को सम्मिलित किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि यह युद्ध मुख्यतः भू–राजनीतिक प्रतिस्पर्धा में निहित है, विशेष रूप से NATO के विस्तार, क्षेत्रीय सुरक्षा चिंताओं तथा रूस और यूक्रेन के ऐतिहासिक संबंधों से संबंधित कारकों में। इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन दर्शाता है कि अंतरराष्ट्रीय संगठनों और प्रमुख शक्तियों की भूमिका इस संघर्ष और इसके परिणामों को आकार देने में महत्वपूर्ण रही है। यह युद्ध वैश्विक स्तर पर राजनीतिक ध्रुवीकरण, आर्थिक अव्यवस्था और मानवीय संकट का कारण बना है। अध्ययन के अंत में दीर्घकालिक शांति और स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए कूटनीतिक समाधान, संस्थागत सुधार और वैश्विक सहयोगात्मक प्रयासों की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

मुख्य शब्दः *रूस, यूक्रेन, युद्ध, भू–राजनीति, अंतरराष्ट्रीय संबंध, वैश्विक सुरक्षा, विदेश नीति।*

प्रस्तावना

रूस–यूक्रेन युद्ध समकालीन अंतरराष्ट्रीय संबंधों में एक महत्वपूर्ण मोड़ का प्रतिनिधित्व करता है, जो शीत युद्ध के बाद के दौर में भू–राजनीतिक तनावों और शक्ति राजनीति के पुनरुत्थान को दर्शाता है। रूस और यूरोप के बीच सेतु के रूप में यूक्रेन की भौगोलिक स्थिति ने इसे ऐतिहासिक रूप से एक रणनीतिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र बना दिया है। 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद स्वतंत्रता प्राप्त करने के पश्चात यूक्रेन ने यूरोपीय संघ और NATO जैसे पश्चिमी संस्थानों के साथ निकट संबंध स्थापित करने का प्रयास किया। इस परिवर्तन को रूस ने अपनी क्षेत्रीय प्रभावशीलता और सुरक्षा हितों के लिए सीधी चुनौती के रूप में देखा। यह संघर्ष 2014 में उस समय और अधिक बढ़ गया जब रूस ने क्रीमिया का अधिग्रहण कर लिया और पूर्वी यूक्रेन में अलगाववादी आंदोलनों की शुरुआत हुई। इसके बाद फरवरी 2022 में रूस द्वारा यूक्रेन पर बढे पैमाने पर सैन्य आक्रमण ने स्थिति को और अधिक गंभीर बना दिया। इस घटना ने न केवल क्षेत्रीय अस्थिरता उत्पन्न की बल्कि प्रमुख वैश्विक शक्तियों और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं को शामिल करते हुए एक व्यापक अंतरराष्ट्रीय संकट को जन्म दिया। इस युद्ध के प्रभाव न केवल युद्धक्षेत्र तक सीमित नहीं रहे, बल्कि इसने वैश्विक गठबंधनों को पुनर्गठित किया, आर्थिक प्रणालियों को बाधित किया और एक गंभीर मानवीय संकट उत्पन्न किया। ऊर्जा सुरक्षा, खाद्य आपूर्ति में व्यवधान तथा वैश्विक महंगाई जैसे मुद्दे इस संघर्ष से जुड़े प्रमुख वैश्विक चुनौतियों के रूप में उभरे हैं। इसके अतिरिक्त, इस युद्ध ने अंतरराष्ट्रीय संगठनों की शांति और सुरक्षा बनाए रखने की क्षमता पर भी महत्वपूर्ण प्रश्न खड़े किए हैं। इसी संदर्भ में, प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य रूस–यूक्रेन युद्ध का व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करना है, जिसमें इसके भू–राजनीतिक कारणों की जांच, अंतरराष्ट्रीय प्रतिक्रियाओं का मूल्यांकन तथा इसके वैश्विक प्रभावों का आकलन शामिल है। साथ ही, यह अध्ययन भू–राजनीतिक, आर्थिक और मानवीय दृष्टिकोणों को एकीकृत विश्लेषणात्मक ढांचे में समाहित करके विद्यमान साहित्य में योगदान देने का प्रयास करता है।

अध्ययन के उद्देश्य

- रूस–यूक्रेन संघर्ष की ऐतिहासिक एवं भू–राजनीतिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
- युद्ध के प्रमुख कारणों का विश्लेषण करना, जिनमें NATO का विस्तार, क्षेत्रीय सुरक्षा चिंताएँ तथा राजनीतिक कारक शामिल हैं।
- संघर्ष को प्रभावित करने तथा उसके प्रति प्रतिक्रिया देने में वैश्विक शक्तियों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों की भूमिका का मूल्यांकन करना।
- वैश्विक स्तर पर युद्ध के राजनीतिक, आर्थिक एवं मानवीय प्रभावों का आकलन करना।
- संघर्ष के समाधान तथा वैश्विक शांति एवं स्थिरता को बढ़ावा देने हेतु नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध प्रविधि

- यह अध्ययन गुणात्मक, वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसमें भू–राजनीतिक घटनाओं और अंतरराष्ट्रीय प्रतिक्रियाओं की व्याख्या पर विशेष ध्यान दिया गया है।
- इस शोध में द्वितीयक आंकड़ों का उपयोग किया गया है, जिनमें पुस्तकें, शोध पत्रिकाएँ, विद्वत लेख, सरकारी प्रकाशन, नीतिगत दस्तावेज तथा संयुक्त राष्ट्र, NATO, विश्व बैंक एवं अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) जैसी संस्थाओं की रिपोर्टें शामिल हैं।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
डॉ देवेंद्र कुमार पाण्डेय सहायक आचार्य राजनीति शास्त्र विभाग गांधी स्मारक त्रिवेणी पी.जी. कॉलेज, बरदह, आजमगढ़

How to cite this article:
पाण्डेय. देवेंद्र. कुमार. (2026). रूस-यूक्रेन युद्धः भू-राजनीतिक कारण एवं अंतरराष्ट्रीय प्रतिक्रियाओ का वैश्विक प्रभाव. Journal of research & development, 18(4(A)), 1–4. https://doi.org/10.5281/zenodo.20373223

Quick Response Code:

Website: https://jrdrvb.org/

DOI: 10.5281/zenodo.20373223

OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-4(A)| April-2026

- विश्लेषणात्मक ढांचा अंतरराष्ट्रीय संबंधों के प्रमुख सिद्धांतों जैसे यथार्थवाद, उदारवाद एवं भू–राजनीतिक दृष्टिकोण पर आधारित है।
- अध्ययन में तुलनात्मक एवं विषयगत विश्लेषण पद्धतियों का उपयोग किया गया है, जिससे संघर्ष से संबंधित प्रवृत्तियों, पैटर्नों तथा नीतिगत प्रतिक्रियाओं का अध्ययन किया जा सके।

साहित्य समीक्षा

रूस–यूक्रेन युद्ध ने राजनीति विज्ञान, भू–राजनीति तथा अंतरराष्ट्रीय संबंधों के क्षेत्र में व्यापक अकादमिक ध्यान आकर्षित किया है। विभिन्न शोधकर्ताओं ने इस संघर्ष का विश्लेषण विभिन्न सैद्धांतिक एवं विश्लेषणात्मक दृष्टिकोणोंकृजैसे यथार्थवाद, उदारवाद तथा संरचनावाद, के माध्यम से किया है। जॉन जे. मियरशाइमर (2014) ने यथार्थवादी दृष्टिकोण से यह तर्क दिया है कि यूक्रेन संकट मुख्यतः पश्चिमी नीतियों, विशेषकर NATO के विस्तार, का परिणाम है, जिसने रूस के प्रभाव क्षेत्र को चुनौती दी। उनके अनुसार, महाशक्तियाँ अपनी सीमाओं के निकट सुरक्षा खतरों के प्रति अत्यंत संवेदनशील होती हैं, और रूस की कार्रवाइयों को घेराबंदी की आशंका के प्रति एक रणनीतिक प्रतिक्रिया के रूप में समझा जा सकता है। इसी प्रकार, हॉलफोर्ड मैकिंडर का हार्टलैंड सिद्धांत व्यापक भू–राजनीतिक संदर्भ प्रदान करता है, जिसके अनुसार पूर्वी यूरोप पर नियंत्रण वैश्विक प्रभुत्व के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस संदर्भ में यूक्रेन की भौगोलिक स्थिति इसे वैश्विक शक्ति राजनीति में अत्यंत रणनीतिक क्षेत्र बनाती है। रिचर्ड सक्वा (2015) ने इस संघर्ष के ऐतिहासिक एवं राजनीतिक आधारों पर बल दिया है। उन्होंने शीत युद्ध के बाद की विश्व व्यवस्था तथा रूस को एक सहयोगात्मक यूरोपीय सुरक्षा ढांचे में शामिल करने में विफलता को इस संकट का प्रमुख कारण माना है। उनके अनुसार, यूक्रेन संकट रूस और पश्चिम के बीच एक गहरे संरचनात्मक संघर्ष को दर्शाता है। एंड्रयू विल्सन (2014) ने यूक्रेन के आंतरिक राजनीतिक परिवर्तनों पर ध्यान केंद्रित किया है, विशेषकर यूरोमैदान आंदोलन, जिसने यूक्रेन के यूरोप की ओर झुकाव और रूस से दूरी बनाने में एक महत्वपूर्ण मोड़ प्रदान किया। विद्वानों ने संयुक्त राष्ट्र और NATO जैसी अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका का भी विश्लेषण किया है। जहां NATO को यूक्रेन के समर्थन में एक प्रमुख भूमिका निभाने वाला माना गया है, वहीं आलोचकों का मत है कि इसके विस्तार ने रूस के साथ तनाव को और बढ़ाया है। संयुक्त राष्ट्र के अध्ययनों में युद्ध के मानवीय प्रभावोंकृजैसे विस्थापन, नागरिक हताहत तथा मानवाधिकार उल्लंघनकृको रेखांकित किया गया है, हालांकि सुरक्षा परिषद में राजनीतिक विभाजन और वीटो शक्ति के कारण इसकी प्रभावशीलता सीमित रही है। विश्व बैंक और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) की 2022–2023 की रिपोर्टों में युद्ध के आर्थिक प्रभावों, जैसे–वैश्विक महंगाई, ऊर्जा बाजार में अस्थिरता तथा आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान का विश्लेषण किया गया है। शोधकर्ताओं का मत है कि यह संघर्ष केवल यूरोप तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका प्रभाव विकासशील देशों पर भी पड़ा है, विशेषकर खाद्य सुरक्षा और ईंधन की कीमतों के संदर्भ में। प्रस्तुत अध्ययन इन अंतरालों को भरने का प्रयास करता है, जिसमें संघर्ष का एक समग्र एवं एकीकृत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। अतः उपलब्ध साहित्य की समीक्षा से स्पष्ट होता है कि रूसदृयूक्रेन युद्ध एक जटिल एवं बहुआयामी संघर्ष है, जो ऐतिहासिक, भू–राजनीतिक एवं संस्थागत कारकों से प्रभावित है। यद्यपि यथार्थवादी दृष्टिकोण प्रमुख है, फिर भी इसके वैश्विक प्रभावों को पूरी तरह समझने के लिए अंतः विषय दृष्टिकोण की आवश्यकता बढ़ती जा रही है।

युद्ध के कारण

रूस–यूक्रेन युद्ध भू–राजनीतिक, ऐतिहासिक तथा राजनीतिक कारकों के जटिल अंतर्संबंधों में निहित है। ये कारण अलग–अलग नहीं हैं, बल्कि आपस में जुड़े हुए हैं और शक्ति राजनीति तथा क्षेत्रीय सुरक्षा की व्यापक गतिशीलता को दर्शाते हैं। सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक पूर्वी यूरोप की ओर NATO का विस्तार रहा है। शीत युद्ध की समाप्ति के बाद NATO ने धीरे–धीरे कई पूर्व सोवियत गुट के देशों को अपने में शामिल किया। रूस के दृष्टिकोण से यह विस्तार उसके प्रभाव क्षेत्र में रणनीतिक हस्तक्षेप तथा उसकी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए सीधा खतरा था। यूक्रेन का NATO सदस्यता की ओर बढ़ता झुकाव इस तनाव को और अधिक बढ़ाने वाला साबित हुआ। रूस ने लगातार यूक्रेन के NATO में शामिल होने का विरोध किया है और इसे अपनी "रेड लाइन" माना है। रूस की सीमाओं के निकट NATO के सैन्य ढांचे की संभावित तैनाती ने मॉस्को की सुरक्षा चिंताओं को बढ़ाया और संघर्ष को भड़काने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यूक्रेन पूर्वी यूरोप में एक अत्यंत महत्वपूर्ण रणनीतिक स्थिति रखता है, जो रूस और पश्चिमी यूरोप के बीच एक बफर ज़ोन के रूप में कार्य करता है। इसकी भौगोलिक स्थिति इसे क्षेत्रीय सुरक्षा के दृष्टिकोण से केंद्रीय बनाती है। यूक्रेन पर नियंत्रण या प्रभाव महत्वपूर्ण स्थल मार्गों तक पहुंच तथा सैन्य दृष्टि से लाभ प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, यूक्रेन ऊर्जा संसाधनों, विशेषकर प्राकृतिक गैस पाइपलाइनों, के लिए एक महत्वपूर्ण पारगमन मार्ग है, जो रूस को यूरोपीय बाजारों से जोड़ता है। इससे इसकी भू–राजनीतिक महत्ता रूस के साथ–साथ यूरोपीय संघ के लिए भी बढ़ जाती है। इस प्रकार, यूक्रेन पर प्रभाव की प्रतिस्पर्धा ऊर्जा सुरक्षा, व्यापार मार्गों तथा क्षेत्रीय प्रभुत्व से गहराई से जुड़ी हुई है। रूस और यूक्रेन के बीच ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक संबंधों ने भी इस संघर्ष को प्रभावित किया है। रूस यूक्रेन को अपनी ऐतिहासिक पहचान का अभिन्न हिस्सा मानता हैं। इस साझा इतिहास ने रूस की यह धारणा बनाई है कि यूक्रेन पूरी तरह अलग राष्ट्र नहीं बल्कि उसकी सांस्कृतिक और सभ्यतागत परिधि का हिस्सा है। इसके विपरीत, यूक्रेन ने विशेष रूप से 1991 में स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद अपनी स्वतंत्र राष्ट्रीय पहचान स्थापित करने का प्रयास किया है। इस पहचान और राजनीतिक दिशा में अंतर ने तनाव उत्पन्न किया है, जहां रूस यूक्रेन के पश्चिम की ओर झुकाव का विरोध करता है और यूक्रेन यूरोप के साथ एकीकरण तथा अपनी संप्रभुता को सुदृढ़ करना चाहता है। यूक्रेन के आंतरिक राजनीतिक विभाजन भी इस संघर्ष के महत्वपूर्ण कारणों में शामिल हैं। ऐतिहासिक रूप से यूक्रेन में Pro-West और Pro-Russia राजनीतिक गुटों के बीच विभाजन रहा है। 2013–2014 मे Pro-Russia सरकार को हटाया, यूक्रेन की राजनीतिक दिशा में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। इन आंतरिक विभाजनों ने राजनीतिक स्थिरता को कमजोर किया और बाहरी हस्तक्षेप के अवसर प्रदान किए। रूस ने इन परिस्थितियों का लाभ उठाते हुए पूर्वी यूक्रेन के डोनेट्स्क और लुहान्स्क क्षेत्रों में अलगाववादी आंदोलनों का समर्थन किया, जिससे संघर्ष और अधिक तीव्र हो गया। इस प्रकार, रूस–यूक्रेन युद्ध के कारण बहुआयामी और परस्पर जुड़े हुए हैं, जिनमें भू–राजनीतिक प्रतिस्पर्धा, ऐतिहासिक संबंध, ऊर्जा राजनीति तथा आंतरिक राजनीतिक अस्थिरता प्रमुख रूप से शामिल हैं।

वैश्विक प्रभाव

रूस–यूक्रेन युद्ध के प्रभाव केवल क्षेत्रीय स्तर तक सीमित नहीं हैं, बल्कि इनका विस्तार वैश्विक राजनीतिक, आर्थिक और मानवीय प्रणालियों तक हुआ है। इस संघर्ष ने रूस और पश्चिमी देशों के बीच शीत युद्ध जैसी तनावपूर्ण स्थिति को पुनर्जीवित कर दिया है। इससे अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में विभाजन और ध्रुवीकरण बढ़ा है, जिसके परिणामस्वरूप एक विभाजित वैश्विक व्यवस्था उभरकर सामने आई है। इसके साथ ही, इस युद्ध ने अंतरराष्ट्रीय कानून के मौजूदा मानकों, विशेषकर संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता को चुनौती दी है। इसने वैश्विक शासन संस्थाओं की शांति और सुरक्षा बनाए रखने की क्षमता पर भी प्रश्नचिह्न खड़े किए हैं। यह युद्ध वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए एक बड़ा झटका साबित हुआ है। ऊर्जा और अन्य वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि के कारण वैश्विक महंगाई बढ़ी है। यूरोप, जो रूसी गैस पर निर्भर रहा है, ऊर्जा संकट का सामना कर रहा है और वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों की खोज में लगा है। इसके अतिरिक्त, वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में बाधा उत्पन्न हुई है, जिससे कृषि, विनिर्माण और परिवहन जैसे क्षेत्रों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। युद्ध के मानवीय परिणाम अत्यंत गंभीर हैं। लाखों लोग विस्थापित हो चुके हैं, जिससे हाल के इतिहास के सबसे बड़े शरणार्थी संकटों में से एक उत्पन्न हुआ है। नागरिक हताहतों की संख्या अधिक रही है और अस्पतालों, स्कूलों तथा आवासीय ढांचे जैसी महत्वपूर्ण संरचनाओं का व्यापक विनाश हुआ है। अंतरराष्ट्रीय संगठन राहत प्रदान करने में सक्रिय हैं, फिर भी संकट का पैमाना बहुत विशाल बना हुआ है। इस युद्ध का अप्रत्यक्ष प्रभाव विकासशील देशों पर भी पड़ा है। ईंधन की बढ़ती कीमतों ने जीवन–यापन की लागत को बढ़ाया है, जबकि यूक्रेन से अनाज निर्यात में बाधा ने खाद्य सुरक्षा को प्रभावित किया है। वैश्विक दक्षिण के देशों ने संतुलित विदेश नीति अपनाई है, जिसमें वे रूस और पश्चिमी देशों दोनों के साथ अपने संबंधों को संतुलित करने का प्रयास कर रहे हैं। उदाहरण के रूप में, भारत ने तटस्थ रुख अपनाते हुए कूटनीति और रणनीतिक स्वायत्तता पर जोर दिया है। इस प्रकार, रूस–यूक्रेन युद्ध ने वैश्विक स्तर पर व्यापक और बहुआयामी प्रभाव उत्पन्न किए हैं, जो अंतरराष्ट्रीय राजनीति, अर्थव्यवस्था और मानवीय परिस्थितियों को गहराई से प्रभावित कर रहे हैं।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-4(A)| April-2026

निष्कर्ष

अतः यह स्पष्ट होता है कि रूस–यूक्रेन युद्ध केवल एक क्षेत्रीय संघर्ष नहीं है, बल्कि यह वैश्विक स्तर पर गहरे प्रभाव डालने वाला एक जटिल भू–राजनीतिक संकट है। इसके मूल में शक्ति संतुलन, सुरक्षा चिंताएँ, ऐतिहासिक संबंध तथा अंतरराष्ट्रीय राजनीति की प्रतिस्पर्धात्मक प्रकृति निहित है। यह युद्ध न केवल अंतरराष्ट्रीय संबंधों की संरचना को पुनः परिभाषित कर रहा है, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था, ऊर्जा सुरक्षा और मानवीय स्थिति पर भी व्यापक प्रभाव डाल रहा है। अंतरराष्ट्रीय संगठनों की सीमाएँ और वैश्विक शासन व्यवस्था की कमजोरियाँ भी इस संघर्ष के माध्यम से उजागर हुई हैं। दीर्घकालिक शांति और स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि कूटनीतिक प्रयासों को प्राथमिकता दी जाए, अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं को अधिक प्रभावी बनाया जाए तथा वैश्विक स्तर पर सहयोग को बढ़ावा दिया जाए। साथ ही, यह भी महत्वपूर्ण है कि सभी पक्ष संवाद, विश्वास निर्माण और संतुलित नीति के माध्यम से समाधान की दिशा में आगे बढ़ें। इस प्रकार, यह अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि रूस–यूक्रेन युद्ध से उत्पन्न चुनौतियों का समाधान केवल सैन्य उपायों से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए बहुआयामी और सहयोगात्मक वैश्विक दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

सुझाव

रूस–यूक्रेन युद्ध के विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित नीतिगत एवं व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं–

- संघर्ष के समाधान के लिए सैन्य उपायों के बजाय संवाद, वार्ता और मध्यस्थता को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शांति वार्ता को सक्रिय रूप से बढ़ावा देना आवश्यक है।
- संयुक्त राष्ट्र जैसे संगठनों की प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए संरचनात्मक सुधार किए जाने चाहिए, विशेषकर सुरक्षा परिषद में वीटो शक्ति के उपयोग पर पुनर्विचार आवश्यक है।
- क्षेत्रीय सुरक्षा व्यवस्था में संतुलन बनाए रखने के लिए NATO और रूस के बीच विश्वास निर्माण उपाय अपनाए जाने चाहिए, जिससे भविष्य में ऐसे संघर्षों को रोका जा सके।
- यूरोप सहित अन्य देशों को ऊर्जा स्रोतों के विविधीकरण पर ध्यान देना चाहिए, ताकि किसी एक देश पर निर्भरता कम हो और ऊर्जा संकट से बचा जा सके।
- युद्ध प्रभावित क्षेत्रों में शरणार्थियों, विस्थापित लोगों और पीड़ितों के लिए अंतरराष्ट्रीय सहायता को बढ़ाया जाना चाहिए। स्वास्थ्य, खाद्य और आवास सुविधाओं को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।
- वैश्विक महंगाई और आपूर्ति श्रृंखला संकट को नियंत्रित करने के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग आवश्यक है। विकासशील देशों के लिए विशेष आर्थिक सहायता योजनाएँ लागू की जानी चाहिए।
- भारत जैसे देशों को शांति प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए, ताकि संतुलित और समावेशी समाधान विकसित हो सके।
- संघर्ष के मूल कारणों जैसे भू–राजनीतिक प्रतिस्पर्धा और सुरक्षा चिंताओं को ध्यान में रखते हुए दीर्घकालिक शांति एवं स्थिरता के लिए व्यापक रणनीति बनाई जानी चाहिए।
- भ्रामक सूचनाओं को रोकने और पारदर्शिता बढ़ाने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सूचना तंत्र को मजबूत किया जाना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. Mearsheimer, J. J. (2014). Why the Ukraine crisis is the West's fault. *Foreign Affairs*, 93(5), 77–89.
2. Sakwa, R. (2015). *Frontline Ukraine: Crisis in the borderlands*. I.B. Tauris.
3. Wilson, A. (2014). *Ukraine crisis: What it means for the West*. Yale University Press.
4. Mackinder, H. J. (1904). The geographical pivot of history. *The Geographical Journal*, 23(4), 421–437.
5. Allison, R. (2014). Russian 'deniable' intervention in Ukraine. *International Affairs*, 90(6), 1255–1297.
6. Charap, S., & Colton, T. J. (2017). *Everyone loses: The Ukraine crisis and the ruinous contest for post-Soviet Eurasia*. Routledge.
7. Tsygankov, A. P. (2015). Vladimir Putin's last stand. *Post-Soviet Affairs*, 31(4), 279–303.
8. Galeotti, M. (2016). Hybrid war or gibridnaya voyna? *Small Wars & Insurgencies*, 27(2), 282–301.
9. United Nations. (2022). *Report on the humanitarian situation in Ukraine*. UN Publications.
10. NATO. (2022). *NATO's response to Russia's invasion of Ukraine*. NATO Official Reports.
11. World Bank. (2023). *Global economic prospects*. World Bank Publications.
12. International Monetary Fund (IMF). (2022). *World economic outlook*. IMF Publications.
13. European Commission. (2022). *EU response to the Ukraine crisis*. European Union Reports.
14. Freedman, L. (2019). Ukraine and the art of strategy. *Survival*, 61(3), 7–38.
15. Kofman, M., & Rojansky, M. (2015). A closer look at Russia and Ukraine. *Kennan Institute*.
16. Kuzio, T. (2017). *Putin's war against Ukraine*. CreateSpace Publishing.
17. Hill, F., & Gaddy, C. (2015). *Mr. Putin: Operative in the Kremlin*. Brookings Institution Press.
18. Ambrosio, T. (2017). The geopolitics of NATO expansion. *International Politics*, 54(4), 513–529.
19. Motyl, A. J. (2016). The Ukraine crisis. *World Affairs*, 178(6), 7–14.
20. Cohen, S. F. (2019). War with Russia? *The Nation*.
21. Rutland, P. (2014). The Ukraine crisis and Russian nationalism. *Europe-Asia Studies*, 66(9), 1401–1425.
22. Aslund, A. (2018). *Ukraine: What went wrong and how to fix it*. Peterson Institute.
23. Götz, E. (2016). Russia, the West, and Ukraine crisis. *Contemporary Politics*, 22(3), 297–313.
24. UNHCR. (2023). *Ukraine refugee situation report*. United Nations High Commissioner for Refugees.
25. OECD. (2022). *Economic outlook and global impacts of the war*. OECD Reports.
26. BBC News. (2022). Ukraine conflict: What we know so far.
27. Council on Foreign Relations. (2023). Ukraine conflict global impact report.
28. SIPRI. (2022). *Military expenditure and arms transfers report*. Stockholm International Peace Research Institute.
29. World Food Programme. (2022). *Food security implications of Ukraine war*. WFP Reports.
30. Chatham House. (2022). *The Russia–Ukraine crisis and European security*.
31. India Ministry of External Affairs. (2023). *India's position on Russia–Ukraine conflict*.

32. Baldwin, D. A. (1985). Economic statecraft. *Princeton University Press*.
33. Waltz, K. N. (1979). *Theory of international politics*. McGraw-Hill.